

2342



Handwritten text in a script, possibly Indic, located below the diagram. The text is written in dark ink and appears to be a single line or a short phrase.

Handwritten text in a script, possibly Indic, located below the diagram. The text is written in red ink and appears to be a single line or a short phrase.

Handwritten text in a script, possibly Indic, located at the bottom of the page. The text is written in dark ink and appears to be a single line or a short phrase.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नन्दितस्का न ॥ गीत विस्तारक ॥
श्री क ॥ कि कि कल्याण लिपि क ॥ गुरु श्री वृष्णायाय वन्द्य
रु ॥ कल्याण गुरु श्री सि त ॥ विगतया, पात्र पपाता पुष्टी ॥
ॐ कृष्णाय धर्म विपुला दक्षिणा विरुं व वि तं न री विस्तार
प्रदयात्मकं वरगुणं वदं मदा सर्वदा ॥ गीत ॥ रुद्र सीत

श्री क ॥ कि विस्तारक ॥ गीत विस्तारक लिपि श्री क ॥ न
यो सर्व तथा गता पुन गता धनं कल्याण नाथ गुण श्री
वृष्णा सत्तनामरु तित तना ॥ संसार दोष गुरु ॥ अस्य
कृं वरवत्ता दम सप्त सत्या दने गत्य नाता वरुक्त
अगत दित्र वया दुरुत श्री क धर्म ॥ गीत नमो भगवते

ल। गृह क॥ र्यव को सर्व सखा, रं गृहि ता अंदजा बाहु ग
यि जावा, रं सादजा बाउ पाद का बा, न पीता वा अरु पीता
वा, रं गीता वा अरु गीता वा, न व रं गीता वा, नाग रं गीता
वा, रं वं ग रं सखा मया मरु मरु, मरु पद पु ति थप यि
त या॥ गीत पु म दी त। गृह क नृ य ना क मरु पद दली, मित्र

भी क वरु गृह अं व कं रं ध मा रं व जा दि अग पा नि, य निग
न मित्र वं गी रं मा न रं मी। वा बा का, नृ क क, द न यि
व न रि न रं ग रं म रं रं वि शा, या या गी, म रं मा व, पि रं व
न विरु शं, कि ति व कृ व रं॥ गीत ति रं रं रं गृह क मी रं
म द रं क, क मी रं पि रं म रं क रं न रं रं स्या प वि व

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४॥

१॥ दूष्काहिनोपिः ॥ अग्निः वायुसमा प्रोतिः सिर्षेयिदास्यात् ॥ मेमस्ये देवं गामादि
पिनतद्रास्कं रद ॥ अत्रैव रानां ॥ १ ॥ दिनद्वयमेव हतासरेकं छातयेज्जमेवोद
सायिदं दं ॥ मयसं त्रुमाग्निहरतेपिसावं राकासदेव्यदेवचन्द्रमारांम् ॥ २ ॥ कसरजं
ध्रुजानैकठिथेथाग्निमुहर्गितो नोर्जेरिमाथयिदा ॥ मयस्य प्रमा प्रोतिदोषदां कसि
निषटिराविलगेषु हतंगरा री ॥ ३ ॥ नृपस्य करामैर्धनत्रासं पूत्रं सर्वथि रस्ये मे तत्र
भाळंतिकाळं म ॥ अरं न्येदेवां दोषमावि तंच नेत्रांग रोगि उच दृष्टिमाना म् ॥ ४ ॥ मेवा
ग्निनेत्रोः कमलकुक्ष रोगि वाङ्मया स्यात्मुषपंदरा रं म् ॥ सुवितापिरगको कुर देवता
नां दोषसाफिमितत्र दृष्ट्यतिना म् ॥ ५ ॥ वधी रस्ये नै निवसौ रश्म्या नै त्रो विदां कीत्य
दत्तामि तस्यात् ॥ गृध्रक कमानां दोषहिरागौ शुक्रो मकै दृष्टि वषे व रानां म् ॥ ६ ॥

रो जे पुपौ कंठमौलि ग्र द स्याः बुद्धि मन्द नेत्र क्राध्वे रा ए ना म ॥ दोष स सा ते ज न जिव तै र
 पर तो धा ना स स स नि व राना म ॥ ७ ॥ रो मुख जो रा नि बुद्धि वि सृद्धी मति सार थे सौ मे
 तथा धि क व म ॥ तथा प्रति स्थानि च मू त रे प्र स र्वा ग म द रा ज के तु दु वि ॥ ८ ॥ इति ग्र
 ह दू कि ॥ मे धे क वे म गौ कं न्या क र्कि मि न तु ला क्र मा त ॥ आदि त्या दि ग्र हा उ चानि वा
 रं व तु त य म ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

१ श्री ३ रिमस्य न दया दस्य स्वस्ति नमः ॥ न कस डि डि डि
 सा नान यगिय मरा नपाः डि डि मे सि न ह पु थि ना नां ॥ अ थः डि न
 काय फा नाः ॥ १ ॥ न श न क वा न नि स द स्या च वि ड नि स्व य नां ॥ १ ॥ म न
 म न ग थः ॥ अ न क न न प जो र न र व नाः डि डि वा व म स्य स्य म रु या नां ॥ म न
 क ज न म रु या म न क स घा व का वः स द स क ध व नि अ न नां ॥ २ ॥ वा य र व
 व ज क प्र र वा व प या सि न हि नः म रा न पा डि डि डि वा न नां ॥ धं धा का
 य म स्य मि सा क व ध म्य स्व च या अः वा क पं च ना को ड नां ॥ ३ ॥
 गिन अ न थ नि डि नः ग थ रु न थ प ना नः ग हा ज ग ग सि थ न न नां ॥ क थ

नीहलकेल

स

स समकुसलतायानसीसा देवदत्त

439

टंकट

CONCLUSION

卷之五

Handwritten text in Devanagari script, arranged in three columns. The script is in an older form, possibly from the 18th or 19th century. The text is written on aged, yellowed paper.

Handwritten text in Devanagari script, continuing from the previous section. It appears to be a single line of text spanning across the width of the page.

Handwritten text in Devanagari script, continuing from the previous section. It appears to be a single line of text spanning across the width of the page.

Handwritten text in Devanagari script, arranged in multiple lines. The script is in an older form, possibly from the 18th or 19th century. The text is written on aged, yellowed paper. There are some red markings or ink used for emphasis or correction.

[illegible][illegible]

